चोपड़ा और यीशु:  २० आध्यात्मिक पाठों की तुलना
(Chopra Comparison)

दीपक चोपड़ा ने एक पुस्तक लिखी हैं जिसका शीर्षक हैं: एक जादूगर का रास्ता, मन चाहा जीवन बनाने के लिए बीस आध्यात्मिक पाठ (१). यह लेख बाइबल और यीशु मसीह की तुलना चोपड़ा के बीस पाठों की जो नई आयु और हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करता हैं. इस लेख का उद्देश्य हिन्दू धर्म और नई आयु के शिक्षण की समानता को दर्शाना हैं और उसी समय यह भी दिखाना हैं की कैसे यह इसाई धर्म के शिक्षण के विपरीत हैं, जिनका अध्ययन अक्सर ही विपरीत रूप में किया जाता हैं.

तुलना किये गए दोनों पाठ मेरे द्वारा ही लिखित हैं. मैंने चोपड़ा के पाठों को संक्षेप में प्रस्तुत करने की कोशिश की हैं. मैंने उनके एक दो मुख्य पाठ को उनके अध्याय या पाठ के शुरू में उद्धृत किया हैं, और फिर उसका विवरण करने की कोशिश भी की हैं. यह मुश्किल हैं क्यूंकि वास्तव में उन्होंने कई पाठों में दो या तीन बात पर जोर दिया हैं, और कई बार ऐसा भी हुआ हैं की एक ही बात को अलग प्रभाव के साथ दोहराया हैं. मैंने उसमे से सबसे प्रभावी और पाठ के केन्द्रीय बिंदु को चुना हैं. उन्होंने मर्लिन और आर्थर की काल्पनिक व्यक्तित्व और उनके संवाद की काल्पनिक निर्माण और उनके शिक्षण के माध्यम का इस्तेमाल कर अपनी दृष्टिकोण का व्याख्या की हैं. मैं इसकी तुलना यीशु की ऐतिहासिक शिक्षण और बाइबल से करूँगा.

| मन चाहि जिंदगी बनाने के लिए | परमेश्वर के योजना अनुसार जीवन जीने के लिए |
|---|---|
| (नई आयु के लिए दीपक चोपड़ा) | (यीशु मसीह के लिए व्याट रोबिनसन) |
| पाठ एक<br>"हम सब में एक जादूगर मौजूद हैं"<br>"जादूगर के पास अमरता का रहस्य हैं"<br>जादूगर एक ऐसा व्यक्ति हैं जो प्रबुद्ध हुआ हैं और यह जानता हैं की हम सब के अन्दर भगवान् हैं. मानव के होश नश्वरता के पीछे छिपा हुआ एक असीमित स्वयं हैं. ब्रह्माण जीवो के अन्दर होता हैं और उसकी वास्तविकता की खोज यहीं पर | पाठ एक<br>एक परमेश्वर हैं और वह तुम नहीं हो<br>इसके विपरीत, बाइबल हमें सिखाता हैं की एक परमेश्वर हैं, महान 'मैं हूँ'. यह परमेश्वर पूरी तरह आत्मा निर्भर हैं, सर्वदा मौजूद हैं और वह तुम हैं नहीं  हो. वह आदमी की खोज पर निर्भर नहीं होता. वह मानव से एक अलग व्यक्तित्व हैं, मानव उसकी सृष्टि हैं. मानव के पास परमेश्वर |

| | |
|---|---|
| होती हैं. चोपड़ा ने जादूगर का सादृश्य उस व्यक्ति के लिए इस्तेमाल किया हैं जो अपने आतंरिक स्व को पहचान प्रबुद्ध हो जाता हैं. एक इंसान के खोज का उत्तर उसके भीतर ही होता हैं. | को जानने की क्षमता हैं लेकिन खुद परमेश्वर होने का नहीं. मानव की खोज का उत्तर उसके बाहर परमेश्वर के व्यक्तित्व में हैं. |
| पाठ दो<br>जादू की वापसी तभी संभव हैं जब मासूमियत की वापसी हो<br>मानव की प्राकृतिक स्थिति, 'मासूमियत' वह क्षमता हैं जिससे वह सारे श्रेणीय और लेबल के साथ खुद के परे जीता हैं. मानव वास्तविकता और अनुभव का निर्माता हैं. हम दुनिया के सब चीज को जान देते हैं. तुम क्या देखते हो और कैसे देखते हो, माने रखता हैं क्यूंकि वह वास्तविकता का निर्माण करता हैं.<br>लेबल के बिना एक नए दृष्टिकोण से देखो. अपने दिमाग को वास्तविकता का बॉक्स मत बनाओ. तुम्हारी मासूमियत ही सही अस्तित्व हैं. तुम यह महसूस करके निर्दोष होते हो की सबकुछ भगवान् ही हैं और तुम ही भगवान् हो जो खुद को देख रहे हो. तुम्हारे खुद के विचार और जागरूकता इस जगत को जीवन और वास्तविकता देते हैं. | पाठ दो<br>यह दुनिया परमेश्वर के सृजनात्मक अधिकार से निष्पक्ष रूप से मौजूद हैं.<br>हम कानून और वास्तविकताओं के साथ परमेश्वर की निष्पक्ष बनाये गए दुनिया के अधीन हैं. परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की हैं. हम उसकी सृष्टि का एक हिस्सा हैं, ब्रह्मांड की शारीरिक और आध्यात्मिक कानून के अधीन हैं. हम उन चीजों का अनुभव करते हैं जो वास्तव में निष्पक्ष रूप से उपस्थित हैं, चाहे हम उनका अनुभव करे या न करे. यद्यपि हम अपने विचारों को बदल सकते हैं, वास्तविकता की खोज हम कर सकते हैं और करना चाहिए, और हम उसकी सृष्टि नहीं कर सकते. हमारे विचार और कल्पनाये वास्तविक हैं लेकिन वास्तविकता को पैदा नहीं कर सकती. वे या फिर सहीं हैं या नहीं. |
| पाठ तीन<br>"दृश्यों में परिवर्तन होता हैं, द्रष्टा एक सा ही रहता है."<br>प्रबुद्ध व्यक्ति दुनिया को आते जाते हुए देखता हैं और जानता हैं और हर बात को समझते बूझते रहता हैं. यह व्यक्ति वास्तविक रूप से समझता हैं | पाठ तीन<br>जीव एक अलग प्राणी हैं जिनका प्राकृतिक धारणा त्रुटिपूर्ण हैं. मानव सीमित ज्ञान से जानता हैं, हालाँकि परमेश्वर ने हमें तर्कसंगत मन उपहार में दिया हैं जिससे परमेश्वर सच्चाई को मानव तक पहुंचा सकता हैं. |

| | |
|---|---|
| और सब जानता हैं. तर्कसंगत मन से प्रबुधि नहीं प्राप्त हो सकती हैं. किसी प्राणी के बारे में सपना देखना और कोई प्राणी तुम्हारे बारे में सपना देखने में बहुत थोडा अंतर हैं, वास्तव में दोनों एक ही बात हैं. यह इस वजह से हैं क्यूंकि यह दुनिया एक विशाल चेतना हैं जो की एकीकृत हैं और थोडा सा अंतर हैं उस स्वयं और स्वयं देखने वाली दुनिया में. | सब कुछ जानने वाला दृष्टिकोण केवल परमेश्वर का हैं. मानव एक अलग खुदराय प्राणी हैं जिसको सही या गलत की पहचान हैं. हम किसी प्राणी का सपना नहीं हैं बरन परमेश्वर की सृष्टि हैं. हमारे विचार, या तो अंतर्ज्ञान या तर्कसंगत ज्ञान दोनों ही बराबर माने में दोषपूर्ण हैं. हालांकि तर्कसंगत ज्ञान भरोसेमंद हैं, जिसके माध्यम से परमेश्वर निष्पक्ष सत्य को इतिहास के द्वारा या तर्कसंगत मन के द्वारा हम तक पहुंचता हैं. |
| पाठ चार<br>'यह तुम्हारा भाग्य हैं की तुम अनंत काल की भूमिकाओं को नाट्य रूपान्तर करो, जबकि यह भूमिकाये तुम्हारी नहीं हैं'<br>'एक जादूगर अपने आप को स्थानीय स्थर पर एक बड़ी सी दुनिया का सपना देखने के लिए नहीं विश्वास कर सकता. एक जादूगर खुद ही स्थानीय स्थिति का सपना देखने वाली एक दुनिया हैं.'<br><br>तुम अभी नाट्य रूपांतर कर रहे भूमिका और व्यक्तित्व से अधिक हो. तुम कालातीत और अनंत हो.<br><br>हम निवास कर रहे यह शरीर हम लगातार खेल रहे अंतहीन भूमिकाये निभाने वाली एक अस्थायी भूमिका हैं. वास्तव में स्वतंत्र और प्रबुद्ध होने के लिए, हमें अपने भूमिकाओं से बहार निकल कर, सामान्य जागरूकता में प्रवेश करना हैं, जो की हमारे समझ से परे हैं. वास्तव रूप से मानव होने का मतलब हैं, मूक और अनाम होकर वर्तमान और व्यक्तित्व की सीमाओं से बचना और बस यह | पाठ चार<br><br>व्यक्ति विलक्षण हैं, परिमित, परमेश्वर द्वारा सृजी हुई एक व्यक्तित्व.<br><br>मानव जीवन पवित्र होता हैं क्यूंकि यह परमेश्वर के छवि में सृजा गया होता हैं. मानव परमेश्वर के छवि में स्व जागरूकता परमेश्वर को जानने की क्षमता से सृजा गया हैं. तुम समय और अंतरिक्ष में पैदा हुआ एक सीमित प्राणी हो. तुम्हारे पास जीने के लिए एक ही जीवन हैं और जिसके बाद तुम परमेश्वर को जवाबदेह हो जाओगे. तुम इस एक जीवन से क्या करते हो वह अत्यंत ही महत्वपूर्ण हैं, और सारे लोगों का न्याय होगा की क्या वे परमेश्वर को आदर और महिमा करते हुए उनके उद्देशों का पालन करते हुए जीए या फिर उनके और उनके मार्ग के विद्रोह में जिए. |

| | |
|---|---|
| जानना की तुम हो. | |
| पाठ पांच<br>“जादूगर मृत्यु पर विश्वास नहीं करते”.<br><br>जीवन शुरूआत या अंत के बिना एक निरंतरता है. मृत्यु मन की एक बुरी आदत हैं, एक भ्रम. प्रबुद्ध समय से उप्पर जीते हैं, वे अनंत ऊर्जा के रूप में रहते हैं. स्वयं या चेतना किसी भी चीज की मृत्यु को तब तक जीवित रखता हैं जब तक वह वापस इस पृथ्वी पर किसी अन्य रूप में न लौटे. | पाठ पांच<br><br>मृत्यु वास्तव हैं<br><br>इस दुनिया में जीवन का एक शुरुआत और अंत होता हैं. हम मृत्यु को दूर करने की कल्पना नहीं कर सकते. मानव का परमेश्वर के विद्रोह का कारण मृत्यु इस दुनिया में आया. मृत्यु का भय इसलिए होता हैं क्यूंकि वह एक सच्चाई हैं. हम एक शरीर से बढ़ कर हैं, हम आत्मा भी हैं. आत्मा शरीर को जीवित रखता हैं लेकिन वापस इस धरती पर नहीं लौटता. |
| पाठ छः<br><br>जादूगर की चेतना एक क्षेत्र हैं जो हर जगह मौजूद होता हैं.<br>क्षेत्र में समाहित ज्ञान की धारा शाश्वत हैं और उसकी प्रवाह सनातन हैं.<br>तुम्हारी खुद की यादें और अहंकार की भावना, वास्तविकता की एकता से तुम्हे अलग कर रही हैं. तुम्हे अपने अहंकार को अलग रख, वास्तविकता और चेतना के महान सागर का अनुभव करने की जरूरत हैं. | पाठ छः<br><br>परमेश्वर शाश्वत और सर्व-ज्ञानी हैं, जिनमे सारी बुद्धि और ज्ञान रहती हैं.<br>सत्य का निष्पक्ष ज्ञान और परमेश्वर के साथ सम्बन्ध की हमारा लक्ष्य हैं. हम सीमित हैं, और हम सर्व ज्ञानी या हर जगह मौजूद नहीं हो सकते. परमेश्वर, यीशु मसीह के द्वारा इस दुनिया में प्रवेश किये, ताकि हम उनको जान सके, एक मात्र सच्चा, सर्वज्ञ और अमर परमेश्वर हैं. |

| | |
|---|---|
| पाठ सात<br>"जब धारणा के द्वार शुद्ध हो तो आप अनदेखी दुनिया देखना शुरू कर सकेंगे".<br>शुद्धिकरण एक नैतिक मुद्दा नहीं हैं, लेकिन एक विचार का मुद्दा हैं. यह दुनिया को देखने का एक नया तरीका हैं. सूक्ष्म और अदृश्य दुनिया के माध्यम से हम शुद्धिकरण पा सकते हैं. जगे रहने से सपना देखना शरीर की अधिक वास्तविक स्थिति हैं क्यूंकि इसमें हम अपने भौतिक शरीर से मुक्त रहते हैं. गहरे मौन में बड़े शान्ति के साथ हम अपने व्यक्तित्व के उच्च कारण और स्वयं तक पहुँचते हैं. | पाठ सात<br>पापों की क्षमा प्राप्त करना ही शुद्धिकरण हैं.<br>शुद्धिकरण मानवता की नैतिक और वास्तविक स्थिति हैं. जो कार्य हमने किया हैं, जो बात बोला हैं या जो कुछ भी सोंचा हैं (या सोंचना चाहिए), परमेश्वर की परिपूर्णता और व्यवस्था में कम पड़ गया हैं. क्षमा तटस्था के भीतरी दुनिया में बचना नहीं हैं, लेकिन वास्तविक क्षमा प्राप्त करना हैं जो मानव और परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को सुधारता हैं. |
| पाठ आठ<br>"शक्ति का जन्म हमारे भीतर से ही होता हैं"<br>प्यार आत्म स्वीकृति हैं और शारीरिक अहंकार को अलग रखना हैं जिससे हम अपने निजी स्वयं को पा सकते हैं. प्रबुद्ध होके और एकता के साथ हम शक्ति का अनुभव करते हैं. अपने आतंरिक स्वयं की भीतरी शक्ति के साथ होना ही स्वयं की वास्तविक शक्ति को पाना हैं. इस ब्रह्माण के विशेषाधिक्रित बच्चे होने की एकता और एहसास की आतंरिक जागृति को ही प्यार की शक्ति कहते हैं. | पाठ आठ<br>प्रेम परमेश्वर के ओर से होता हैं<br>यह प्यार हैं, ये नहीं की हमने परमेश्वर से प्रेम किया बरन उन्होंने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों का बलिदान होने के लिए अपना बेटा इस दुनिया में भेजा (२). प्यार जागरूकता का एक मुद्दा हैं, न कि व्यक्तिगत स्व के एक महान खगोलीय स्वयं के लिए एक इनकार. प्यार एक बलिदान की क्रिया हैं, एक निजी क्रिया जिसमे दूसरों के लिए अपने जीवन का बलि चढ़ाना हैं, जैसा की यीशु के द्वारा परमेश्वर ने किया. |
| पाठ नौ<br>"शब्दों में संकुचित इरादे जादुई शक्तियों का बयान करते हैं"<br>प्रबुद्धि के माध्यम से, एक व्यक्ति अपने इरादों को जादुई शक्ति वाले शब्दों में डाल शक्तिशाली प्रवाह में व्यवस्थित कर सकता हैं. आप जैसी जिंदगी | पाठ नौ<br>परमेश्वर को संतुष्ट करने वाली और उन्हें स्वीकारयोग्य बाते सीखो<br>हमारी इच्छाये विनाशकारी और बुरी हो सकती हैं. हमें परमेश्वर के मार्ग को सीखना हैं और सही गलत की पहचान भी करनी हैं. परमेश्वर ने |

| | |
|---|---|
| चाहे बना सकते हैं और अपनी हार्दिक इच्छाओं को प्राप्त कर सकते हैं. | हमारे विवेक में अपनी इच्छा को प्रकट किया हैं, और अपने मार्ग को इतिहास के द्वारा मानव तक पहुँचाया हैं. सही माने में जीना अपनी इच्छाओं पर जोर देना नहीं हैं बरन यह जानना हैं की परमेश्वर किन बातों से प्रसन्न होते हैं. |
| पाठ दस<br>"हम सबकी स्वयं की एक परछाई हैं जो हमारी वास्तविकता का एक हिस्सा हैं".<br><br>जब स्वयं की परछाई को गले लगाया जाता हैं, तब उसे स्वस्थता प्राप्त होती हैं. जब वह स्वस्थ होता हैं तब वह प्यार में बदल जाता हैं.<br><br>हम सब के अन्दर, विभिन्न अवधारणा होती हैं जीने के योग्य हम क्या प्रतिस्पर्धा करते हैं. अपने अन्दर कैद किये हुए उस स्वयं की परछाई को अपनाना सीखो. श्वास पर नियंत्रण करके हमारे अन्दर प्रतिस्पर्धा कर रहे व्यक्तित्वों से और अतीत की यादों से संपर्क कर सकते हैं. हम पुरानी उर्जा और नकारात्मक निर्णय और अपराध की भावनाओ को और स्वयं की परछाई को उत्पन्न कर सकते हैं. | पाठ दस<br><br>एक परमेश्वर हैं जिसकी बात सुनना हमें सीखना हैं, और उसपर विशवास करके ही हम सही हो सकते हैं.<br><br>हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता हैं परमेश्वर से सही रहना. परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध पाप के द्वारा टूट जाते हैं. हमारी अंतरात्मा की आवाज इस बात की पुष्टि देता हैं. यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा, परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध बहाल हो सकता हैं. हमारे जगह में क्रूस पर यीशु की बलि के द्वारा ही हमें क्षमा प्राप्त होता हैं. उसने हमारे पापों की सजा अपने उप्पर ले लिया. उसपर विश्वास और भरोसा कर हम क्षमा प्राप्त कर सकते हैं और परमेश्वर के साथ सही हो सकते हैं. |
| पाठ ग्यारह<br>जादूगर कीमियों का शिक्षक हैं. कीमिया परिवर्तन होता हैं.<br><br>तुम दुनिया हो. जब तुम अपना परिवर्तन करते हो, जिस दुनिया में तुम रहतो हो वो भी परिवर्तित | पाठ ग्यारह<br><br>परमेश्वर अपने प्रेम और कृपा के माध्यम से मानव का परिवर्तन करता हैं, परिवर्तन की हमारी आशा हैं की परमेश्वर के साथ चलना. परिवर्तन की आशा हमारे भीतर नहीं हैं, लेकिन |

| | |
|---|---|
| हो जाएगा.<br>सारी चीजो से सम्बन्ध तोड़कर हम कीमिया की शक्ति की सीमा को पार कर सकते हैं ताकि हम स्वयं का परिवर्तन कर सके. सही दुनिया और सही वास्तविकता तुम्हारे भीतर ही हैं. भीतरी शुद्ध व्यक्तितिव के माध्यम से हम अपने आप को बदलते हैं. क्यूंकि हम ही दुनिया हैं, तो जब हम अपना परिवर्तन करते हैं तब इस दुनिया का भी परिवर्तन करते हैं. | हमारे बिना परमेश्वर के व्यक्तित्व में हैं. मानव का भीतर भ्रष्ट हो चूका हैं, और हमें परमेश्वर का बचने वाला हाथ की आवश्यकता हैं. अपने नाहक दया और करुणा के माध्यम से पहले वे कार्य करते हैं. जैसे हम उनके साथ चलते हैं, वे हमें अपने मार्ग को सिखाते हैं और हमारा भीतरी परिवर्तन करते हैं ताकि हम उनके पुत्र यीशु के नाई हो जाए. |
| पाठ बारह<br>"व्यवस्था अराजकता का एक और चेहरा हैं, अराजकता व्यवस्था का एक और चेहरा हैं. "<br><br>" मानव व्यवस्था नियम से बने हुए हैं. जादूगर के व्यवस्था में कोई नियम नहीं हैं - वह जीवन की प्रकृति के साथ बहती हैं."<br><br>जिंदगी जैसी मिलती हैं वैसे ही आती हैं, अप्रत्याशित को स्वीकार करना हमें सीखना हैं और अराजक के साथ रहना हैं और जीवन का एक हिस्से के रूप में उसे स्वीकारना हैं. नियम विवश करती हैं व्यवस्था की एक झूठी आशा देती हैं. जिंदगी जैसी आती हैं वैसे ही बहते देना चाहिए. व्यवस्था को कभी भी जिंदगी में लागू नहीं किया जा सकता. | पाठ बारह<br>परमेश्वर ने दैविक रूप से जीवन का आदेश दिया हैं और एक उद्देश्य के लिए उसकी देख रेख करता हैं.<br><br>जिंदगी अपने साथ कुछ ऐसी चीजे लाती हैं जिनको समझना मुश्किल हैं. हमारे जीवन में कुछ ऐसी घटनाएं हैं जिनके उद्देश्य का निर्णय करना मुश्किल हैं. फिर भी परमेश्वर अपने उद्देश्य को उन लोगों पर प्रकट करते हैं जो उन्हें ढूढते हैं और ज्ञान के साथ उनकी ओर देखते हैं. हम सत्य का और उन सिद्धांतो का पालन कर सकते हैं जो हमारे जीने के मदद के लिए नियम बनाती हैं. परमेश्वर ने खुद से उन नियमो को बताया हैं जो उनकी अच्छाई और सच्चाई की वर्णन करती हैं. |
| पाठ तेरह<br>"जिस वास्तविकता का आप अनुभव करते हैं वह आपकी उम्मीदों का दर्पण हैं." | पाठ तेरह<br>दिखने वाली दुनिया वास्तविक हैं, लेकिन वह सम्पूर्ण नहीं हैं. एक अदृश्य दुनिया भी हैं. |

| | |
|---|---|
| मनुष्यों की दुनिया की परिभाषा उनके उम्मीदों से की जाती हैं. दिन प्रति दिन वास्तविकता को उसी उम्मीद के माध्यम से देखने की उनकी आदत निरंतरता की झूठी भावना पैदा कर सकता हैं. ज्ञात दुनिया एक भ्रम हैं, और जो अज्ञात हैं वह प्रबुद्ध के लिए आजादी की दुनिया हैं, विज़र्ड के लिए. | दिखने वाली दुनिया वास्तविक हैं. जैसे हमारी धारणाओ गलत हो सकती हैं वैसे ही यह भी गलत हो सकता हैं. यहाँ एक वास्तविक उद्देश्य हैं की हमें अपनी काल्पनिक और संभावनाओ की दुनिया में बचने का प्रयास नहीं करना चाहिए, लेकिन हमें मानव के अस्तित्व के तथ्यों का सामना करना चाहिए. इस दुनिया में एक और आध्यात्मिक आयाम हैं, जैसे मानव अपने शरीर से बढ़ कर एक आत्मा भी होता हैं. |
| पाठ चौदह<br>"जादूगर नुक्सान पर शोक नहीं करते, क्यूंकि एक मात्र चीज जो वह खो सकता हैं वह वास्तविक नहीं हैं."<br><br>हमें नुक्सान और मृत्यु से परे जीना हैं, क्यूंकि जीवन की शक्ति हमेशा नवीनीकृत और नया बनाने के पुनर्जन्म के निरंतर प्रवाह में जारी रहती हैं. जब हम नुक्सान से पीढित होते हैं तो हम उस चीज से बहुत जुड़े हुए होते हैं, क्यूंकि वास्तव में हम कुछ भी खोना नहीं चाहते. | पाठ चौदह<br>मृत्यु और नुक्सान वास्तविक हैं<br><br>मृत्यु और नुक्सान वास्तव हैं और बहुत ही कष्टदायक हो सकते हैं; यह कष्ट वास्तव हैं और कोई भ्रम नहीं. मृत्यु और नुक्सान को हमें अनदेखा नहीं करना चाहिए क्यूंकि यह मानव के लिए लौकिक सबक सिखाते हैं. यीशु मसीह सिर्फ क्रूस पर पापों की क्षमा प्रदान करने नहीं आये, लेकिन उन्होंने उन लोगों के लिए जो उन पर विश्वास करते हैं, अपने पुनरुत्थान के द्वारा मृत्यु की शक्ति को भी तोड़ दिया हैं. |
| पाठ पंद्रह<br>शुद्धतम प्यार वह होता है जहाँ उम्मीदें कम होती हैं - जहाँ लगाव कम होता हैं<br><br>प्यार लगाव की भावना नहीं है, लेकिन सारी बातों से अलगाव हैं. प्यार में कोई न्याय या अधिकार नहीं होता. प्यार उस सार्वभौमिक व्यक्तित्व को प्यार करना हैं, अपने अन्दर के स्वयं को. | पाठ पंद्रह<br>प्यार बलिदान की प्रतिबद्धता हैं<br><br>प्यार एक प्रतिबद्धता हैं जिसमे हम स्वयं का बलि दे देते हैं. प्यार, बुराई और गलत और दुश्मन के अस्तित्व का इनकार करना नहीं हैं, जैसे प्यार सत्य और सही के साथ नहीं रह सकता. प्यार खुद का इनकार करना हैं, आत्म |

| | |
|---|---|
| | बोध होना नहीं. प्यार में दुश्मनों को भी प्यार करना होता हैं, उनको भी जिन्होंने हमें वास्तव में गहराई से नुक्सान पहुंचाया हो. |
| पाठ सोलह<br>"एक जादूगर हर समय में मौजूद रहता हैं".<br>"एक जादूगर हर घटना के अनंत संस्करणों को देखता है."<br><br>आप हर समय और हर जगह की कल्पना कर सकते हैं, और समय और स्थान की सीमाओं से परे खुद का विस्तार कर सकते हैं. ऐसा करने से हम किसी भी स्थान पर रह कर ब्रह्माण के केंद्र में होना सीख पाते हैं. आप अनंतकाल के केंद्र हैं और प्रक्षेपण की शक्ति के माध्यम से समय और स्थान की एकता में रह सकते हैं. | पाठ सोलह<br>आप समय और स्थान के एक प्राणी हो<br><br>हालाँकि आप उन समयों और स्थानों की कल्पना कर सकते हैं जहाँ आप मौजूद नहीं हैं और कभी गए ही नहीं, आपके इस कल्पना और उसके वास्तव में होने के बीच में अंतर हैं. स्थान और समय के परे कल्पना करना एक दिलचस्प बात हैं. यह एक नए नजरिये से देखने में हमारे मन को विस्तार करने में मददगार हैं. लेकिन हम फिर भी सृष्टि की हुई एक रचना हैं जो समय और स्थान से बंधी हुई हैं. |
| पाठ सत्रह<br>आध्यात्मिक सत्य जीवन के रहस्य में एक सुराग की श्रृंखला है.<br>आध्यात्मिक सत्य को अपने ह्रदय के भीतर खोजना चाहिए. जीवन का अर्थ और घटनाएं का मतलब मिल सकता हैं जब आप दैनिक जीवन में आ रहे सुराग के द्वारा उसके अर्थ को ढूँढोगे. | पाठ सत्रह<br><br>आध्यात्मिक सत्य हमें परमेश्वर के द्वारा प्रकट हुआ हैं.<br><br>परमेश्वर हमारे जीवन में कार्य करता हैं, और हमारे जीवन के दैनिक घटनाओ और विवरणों में अर्थ हैं. लेकिन हम किसी भी तरह अपने जीवन के घटनाओं का मतलब नहीं निकाल सकते. जीवन के मूल सत्य हमें परमेश्वर द्वारा प्रकट किया गया हैं, की वे कौन हैं और मानव और दुनिया की प्रकृति क्या हैं. |

| पाठ अठारह | पाठ अठारह |
| --- | --- |
| "आत्मा तुमसे मिलना चाहता है. उसके निमंत्रण को स्वीकार करने के लिए तुम्हे अरक्षित होना होगा."<br><br>जब ढूँढोगे तो अपने दिल से शुरू करना. दिल की गुफा सत्य का घर है. "<br><br>हम अपने आप को सही गलत, अच्छे और बुरे के द्वंद्व के संघर्ष में फ़सा लेते हैं. प्रबुद्ध मनुष्य दर्दनाक जगह में नहीं रहता, लेकिन इस द्वंद्व से बच निकलता हैं. हमने स्वर्ग और नरक, अच्छाई और बुराई की रचना की हैं. हमारी इच्छा हमें इस अच्छे और बुरे के द्वंद्व के चक्र से निकाल सकती हैं. आत्मा हमें जीवन के अर्थ का सुराग देने की कोशिश कर रहा हैं, इन सुरागों का रहस्य खोजना ही जिंदगी का एक बड़ा खेल हैं. | बुराई वास्तव हैं. दिल भ्रामक हैं.<br><br>बुराई वास्तव हैं. नैतिकता और कानून और बुराई के उप्पर जीने की कोशिश एक धोका हैं. बुराई का समाधान (जैसे हत्या और नरसंहार) उसका इनकार करना नहीं हैं, लेकिन उसका विरोध करना हैं और सच्चाई, क्षमा, दया और कृपा की खोज करना हैं. अनैतिकता मानव जाती के लिए बहुत ही खतरनाक हैं. सत्य का स्रोत हमारे बाहर से आना चाहिए, स्वयं परमेश्वर की ओर से, क्यूंकि दिल बहुत ही भ्रामक हैं. (३) |
| पाठ उन्नीस | पाठ उन्नीस |
| "जादूगर कभी भी इच्छाओं की निंदा नहीं करता. अपनी इच्छाओं का पालन करने से ही वे जादूगर बने."<br><br>"अपने दिल के सारी इच्छा को संजोना हैं...."<br><br>इच्छाओं की निंदा नहीं करनी चाहिए. हमें अपने इच्छा का पीछा कर और उनके माध्यम से परिपक्वता और तड़प के उच्च स्तर तक जाना हैं. जब हम अपने शारीरिक और भौतिक इच्छाओं की पूर्ती करते हैं, हम उच्च इच्छा तक पहुँच सकते हैं. हर इच्छा जीवन की श्रंखला की एक कड़ी हैं जो हमें हमारी दिव्यता को जानने की अंतिम इच्छा की अग्रणी करता हैं. | इच्छाओं को अच्छे या बुरे के रूप में मूल्यांकन करना चाहिए<br><br>इच्छाओं में अच्छे या बुरे की<br>पहचान होनी चाहिए. किसी को अपने पडोसी के संपत्ति या स्त्री की इच्छा हो सकती हैं. उन इच्छाओं पर चलना बुरा होगा. उच्च चीजो की इच्छा करना सीखने के लिए नीव की इच्छा का प्रयोग करना एक धोका हैं. इच्छाओं की पूर्ती करने से कभी भी इच्छा संतुष्ट नहीं होता, लेकिन वह और के लिए भूक पैदा करती हैं. एक बुद्धिमान व्यक्ति को विनाशकारी और अच्छे इच्छाओं की पहचान होती हैं. |

| | |
|---|---|
| पाठ बीस<br>"दुनिया  के लिए सब अच्छा करने का मतलब हैं जादूगर बनना."<br><br>भरोसा पर ही भरोसा रखना. जादूगर के मार्ग में चलो. अलगाव का जीवन जीयो. तुम पृथ्वी में से एक हो और तुम्हारी आत्मा भी उसमे शामिल होनी चाहिए. तुम एक व्यक्ति हो, लेकिन तुम खुद पृथ्वी का एक हिस्सा भी हो. इस बात को जानते हुए, पृथ्वी की आत्मा के साथ एक होकर चलो. | पाठ बीस<br><br>यीशु मसीह की अगुवाई करो<br><br>परमेश्वर पर भरोसा रखो. बलिदान वाला प्यार का जीवन जियो जैसा की परमेश्वर ने यीशु मसीह में तुम्हारे लिए किया था. तुम एक जिम्मेदार, नैतिक प्राणी हो, धरती से अलग फिर भी उसके देखभाल के जिम्मेदार. परमेश्वर क्या चाहता हैं उसे जानो- हर वो रास्ता जो सही, शुद्ध, अच्छा और पवित्र है, उसके मार्ग में चलो. |

व्याट रोबिनसन द्वारा लिखित

१) चोपड़ा, दीपक जादूगर का रास्ते, तुम जैसा जीवन चाहते हो वैसा जीवन बनाने के लिए बीस आध्यात्मिक पाठ, हार्मोनी पुस्तके, न्यू योर्क, १९९५.

२)  १ युहन्ना ४:१०

३) सीऍफ़. यिर्मयाह  १७:९